International Journal of Applied Research 2016; 2(10): 725-727

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(10): 725-727
www.allresearchjournal.com
Received: 16-08-2016
Accepted: 17-09-2016

डॉ० दर्शन पाण्डेय
हिन्दी विभाग, शिवाजी कॉलेज दिल्ली विश्व विद्यालय, दिल्ली, भारत।

Correspondence
डॉ० दर्शन पाण्डेय
हिन्दी विभाग, शिवाजी कॉलेज दिल्ली विश्व विद्यालय, दिल्ली, भारत।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी की दशा

डॉ० दर्शन पाण्डेय

प्रस्तावना

वर्तमान इक्कीसवीं सदी ज्ञान–विज्ञान एवं तकनीक की नित नई खोजों के कारण बड़ी तेजी से पूरे विश्व को एक 'ग्लोबल विलेज' के रूप में परिवर्तित होती दिखाई देती है। आज जमीन और आसमान की दूरियाँ सिमटती जा रही हैं, तमाम देश आर्थिक एवं व्यापारिक रूप में एक दूसरे पर निर्भर बन गए हैं, जिसमें एक प्रकार से ध्रुवीकरण की प्रक्रिया देखने को मिलती है। इसी के चलते आज विश्व में भारत की एक विशिष्ट पहचान बनती दिखाई देती है। तमाम देश वर्तमान सदी को 'भारत की सदी' मानने लगे हैं, जिसके पीछे तर्क यह है कि भारत की आर्थिक व्यवस्था बड़ी तेजी से आगे बढ़ रही है, जिसकी समानता केवल चीन ही कर सकने में समर्थ हो रहा है। सबसे प्रमुख कारण यह भी है कि भारत के पास व्यापक प्राकृतिक संपदा तथा युवा मानव संसाधन है, यह दोनों मुख्य कारण भारत में भविष्य की वैश्विक संरचना में उत्पादन के बहुत बड़े आधार सिद्ध हो सकते हैं। इस प्रकार भारत की निरंतर मजबूत होती अंतर्राष्ट्रीय छवि से वैश्विक स्तर पर हिंदी की उपस्थिति ज्यादा प्रखरता के साथ उभरने की संभावना दिखाई देती है। जिस प्रकार हिमालय से निकली गंगा निरंतर आगे बढ़ते हुए गंगा सागर का रुप ले लेती है, उसी प्रकार आज भारत की सर्वप्रमुख भाषा हिंदी 'विश्व भाषा' बनने की प्रक्रिया की ओर अग्रसर है। डॉ० जयंती प्रसाद नौटियाल ने अपने भाषा शोध अध्ययन 2005 में हिंदी बोलने वाले लोगों की संख्या 1 अरब 2 करोड़ 25 लाख 10 हजार 352 बताया है, जबकि चीनी भाषा के लोगों की संख्या मात्र 90 करोड़ 4 लाख 6614 बताया है। यद्यपि यह आंकड़ा पूर्ण तथ्यात्मक न भी हो किंतु यह तो तय है कि हिंदी विश्व की दो प्रमुख भाषाओं में एक तो अवश्य है।

कोई भी भाषा वैश्विक भाषा का दर्जा कई कारणों से प्राप्त करती है, उसमें जो मुख्य कारण है वह उस भाषा का प्रयोग करने वाले लोगों की बहुलता है इस रुप में आज हिंदी बोलने–लिखने एवं संपर्क करने वाले लोगों की संख्या भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के लगभग सभी देशों में मिलती है। एक तथ्य यह भी है कि चीनी भाषा के बाद हिंदी विश्व में सबसे अधिक प्रयुक्त होने वाली भाषा बन चुकी है। टोक्यो विश्वविद्यालय के प्रोफेसर होजुमि तनाका के अनुसार हिंदी बोलने वाले लोगों का स्थान दूसरा है, जबकि चीनी का प्रथम और अंग्रेजी तीसरे स्थान पर पहुंच गई है। वैश्विक भाषा की दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता है कि उस भाषा में रचे गए साहित्य की एक विस्तृत परंपरा हो तथा उसमें विधाएँ वैविध्यपूर्ण एवं समृद्ध हों, उस भाषा के पास विपुल मात्रा में शब्द भण्डार हो, जिससे विश्व की अन्य भाषाओं से विचार–विनिमय सहज रूप से हो सके, साथ ही वह भाषा दूसरी भाषाओं को प्रभावित करने में सक्षम हो। इस दृष्टि से हिंदी भाषा के पास साहित्य सृजन की लगभग 1000 वर्ष सुदीर्घ परंपरा दिखाई देती है, जिसके पास शब्द का अकूत भंडार है। डॉ० करुणाशंकर उपाध्याय के अनुसार, 'हिंदी में साहित्य सृजन की परंपरा भी बारह सौ साल पुरानी है, यह आठवीं शताब्दी से लेकर वर्तमान 21वीं शताब्दी तक गंगा की अनवरत अविरल धारा की भांति प्रवाहमान है। उसका काव्य साहित्य तो संस्कृत के बाद विश्व के श्रेष्ठतम साहित्य की क्षमता रखता है। उसमें लिखित उपन्यास एवं समालोचना भी विश्वस्तरीय है। उसकी शब्द संपदा विपुल है। उसके पास पच्चीस लाख से ज्यादा शब्दों की सेना है उसके पास विश्व की सबसे बड़ी कृषि विषयक शब्दावली है उसने अन्यान्य भाषाओं के बहु– प्रयुक्त शब्दों को उदारतापूर्ण ग्रहण किया है ।उसके साहित्य का उत्तमांश भी विश्व की दूसरी भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से जा रहा है।'[1] वैश्विक स्तर पर हिन्दी जिस तरह से आगे बढ़ रही है इस पर हिन्दी के प्रसिद्ध कथाकार हिमांशु जोशी जी का कथन अवलोकनीय है, 'विश्व में ज्यों– ज्यों हिन्दी का विस्तार हो रहा है, त्यों–त्यों उसके साहित्य का वैश्विक स्वरूप उभरता चला जा रहा है। आज हिन्दी भारत तक ही सीमित नहीं, भारत की सीमाओं से बाहर दूर–दूर के देशों में भी उसकी अलग पहचान बन रही है। मॉरीशस, फीजी, गयाना, सूरीनाम आदि देशों में जहाँ भारतवंशीय प्रचुर संख्या में हैं, उनका साहित्य एक नए रूप में अपनी पहचान बना रहा है। आकार में छोटे–छोटे इन देशों में कितनी आस्था के साथ, समर्पित भाव से लेखक

लिख रहे हैं, उसे देखकर सहज आश्चर्य होता है।[2] वास्तव में भाषा बहता नीर की धारणा के रूप में देखें तो हिन्दी की अविरल धारा धीरे–धीरे पूरे विश्व में प्रवाहमान दिखाई देती है।

आज हिंदी के तमाम शब्द विश्व की अन्य भाषाओं में प्रवेश कर गए हैं, हिंदी ने भी शुद्धतावादी मानसिकता को छोड़ते हुए विश्व की भाषाओं से हजारों शब्दों को अपने में आत्मसात कर लिया है, जिस कारण हिन्दी अधिक शक्ति–सम्पन्न, सुमधुर, ग्राह्य एवं व्यापक बन गई है। यह प्रक्रिया भाषा के सशक्तिकरण के लिए अनिवार्य भी है। यही कारण है कि हिन्दी अंतर्राष्ट्रीय भाषा का रूप ले चुकी है। आज हिंदी के विद्वान नवीनतम तकनीकी एवं वैज्ञानिक शब्दों का निर्माण कर रहे हैं जिससे ज्ञान–विज्ञान के नवीन अनुशासनों में भी हिंदी में कार्य सुलभ होने लगा है। यद्यपि इस ओर काफी कार्य करने की आवश्यकता है।

हिंदी आज जनसंचार माध्यमों के जरिए बड़े पैमाने पर देश –विदेश में प्रयुक्त हो रही है। हिंदी के टीवी चौनलों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। 'स्टार न्यूज' चौनल जो पहले अंग्रेजी में प्रारम्भ हुआ था, किन्तु बाजार के दबाव के कारण इसे हिंदी में भी शुरू करना पड़ा। कई खेल चौनल भी अब हिंदी में शुरू हो चुके हैं, जैसे– स्टार स्पोर्ट्स, ई.एस.पी.एन. आदि चौनल अब हिंदी में कमेंट्री देते हैं। इसी प्रकार हिंदी अखबारों की संख्या भी निरंतर बढ़ती जा रही है, उसका सबसे बड़ा उदाहरण है कि 'इकोनॉमिक्स टाइम' और 'बिजनेस स्टैंडर्ड' जैसे व्यवसाय–परक न्यूजपेपर हिंदी में प्रकाशित होकर व्यापार की नवीन संभावनाओं की तलाश करते दिखाई देते हैं। आज हिंदी भाषा के चौनल 'उपग्रह' के द्वारा विश्व के सभी देशों जैसे दक्षिण पूर्व एशिया, जापान, चीन, कोरिया, खाड़ी देशों में, अफ्रीका, यूरोप, अमेरिका, कनाडा तथा मध्य एशिया तक प्रचारित हो रहे हैं, जहाँ हिंदी भाषा के कार्यक्रमों को देखने वालों की संख्या बहुत अधिक है। मॉरीशस में तो हिंदी के सात से अधिक चौनल प्रसारित हो रहे हैं, इंटरनेट के जरिए हिंदी के समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं सभी देशों की विविध वेबसाइट पर सहज उपलब्ध होने के कारण काफी संख्या में पढ़ी जा रही हैं। आज मजबूरन गूगल, माइक्रोसॉफ्ट ,याहू एवं आईबीएम जैसी मल्टीनेशनल कंपनियाँ बाजार में मुनाफे को देखते हुए हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित कर रही हैं। इस प्रकार मीडिया और वेब पर हिंदी का प्रसार भी बड़ी तीव्रता से हो रहा है।

बीसवीं सदी के अंतिम दशक में निजी चौनल जब केबल टीवी के माध्यम से लोगों तक पहुंचा उससे सूचना एवं मनोरंजन का विस्फोट तो हुआ ही, साथ ही हिंदी भाषा के प्रसार का मार्ग भी खुला। इंटरनेट और केबल चौनलों द्वारा हिंदी फिल्मों और धारावाहिकों की लोकप्रियता ही नहीं बढ़ी बल्कि बाजार और विज्ञापन में भी हिंदी की माँग तेजी से बढ़ी। हिन्दी भाषा में बनने वाली फिल्में और गीत– संगीत को देश में ही नहीं विदेश में भी बहुतायत से पसंद किया जा रहा है। सलमान खान, शाहरुख खान, आमिर खान, अक्षय कुमार जैसे अभिनेताओं की हिन्दी फिल्में करोड़ों का व्यवसाय कर रही हैं, जिसमें हिन्दी भाषा का ही योगदान है। देश– विदेश के अनेक विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा के माध्यम से अनुसंधान किए जा रहे हैं। एक आँकड़े के अनुसार लगभग 140 देशों में हिंदी बोली जाती है, विश्व के लगभग डेढ़ सौ से अधिक विश्वविद्यालयों में किसी न किसी स्तर पर एवं किसी न किसी रूप में हिंदी के अध्ययन–अध्यापन का कार्य हो रहा है। भारत से बाहर के देशों में 25 से ज्यादा पत्रिकाएँ हिंदी भाषा में प्रकाशित हो रही हैं, भारत की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था, मीडिया के प्रसार तथा वैश्वीकरण ने हिंदी के विकास में अहम योगदान दिया है। उदारीकरण के चलते हिंदी भाषा बाजार की भाषा बनी है। 'पेप्सी', 'कोका कोला' जैसी कंपनियाँ हिंदी के विज्ञापनों द्वारा ही अपने उत्पाद को बेच पा रही हैं, इसी कारण 'ठंडा का मतलब कोकाकोला' और पेप्सी 'यही है राइट चॉइस' कहकर यंगिस्तान को लुभाती है।

वर्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी और संचार का युग है, ऐसे में वही भाषा अधिक आगे बढ़ सकती है जो समय के साथ परिवर्तित होते मुहावरों को समझ सके, नवीन प्रयोगों तथा अन्वेषण को आत्मसात कर सके। इसलिए हिंदी भाषा को भी विभिन्न ज्ञान–विज्ञान के अनुशासनों में ढ़लना होगा, वैश्विक स्तर पर खड़े होने के लिए नवीनतम वैज्ञानिक–तकनीकी शब्दावली एवं प्रयोगों के साथ हिंदी को समायोजित करने का सामर्थ्य उत्पन्न करना जरूरी है। वैश्विक धरातल पर वही भाषा मजबूती से टिकी रह सकती है जिस भाषा में निज–अभिव्यक्ति क्षमता (सेल्फ पावर ऑफ एक्सप्रेशन) अत्यंत सशक्त होगी। दूसरे, किसी भी भाषा के लिए उच्च संप्रेषणीयता होनी भी अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार भाषा का अभिव्यक्ति एवं संप्रेषण पक्ष मजबूत होना चाहिए, यद्यपि इस कसौटी पर हिंदी पूरी तरह खरी उतरती है। हिंदी संसार की सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषाओं में से एक है यह लिखित एवं वाचिक स्तर पर वैज्ञानिक तो है ही इसके पास ध्वनियों एवं लिपि चिन्हों की पर्याप्त तार्किक एवं वैज्ञानिक व्यवस्था भी है। इस रूप में रोमन, फारसी आदि लिपियाँ इतनी समृद्धि नहीं है, जितनी हिंदी की देवनागरी लिपि।

हिंदी के साहित्य वैविध्य पर डॉ० करुणाशंकर उपाध्याय का यह कथन अवलोकनीय है, 'आज स्थिति यह है कि गुण और परिमाण दोनों ही दृष्टियों से हिंदी का काव्य साहित्य अपने वैविध्य एवं बहुस्तरीयता में संपूर्ण विश्व में संस्कृत काव्य को छोड़कर सर्वोपरि है। पद्मावत, रामचरितमानस तथा कामायनी जैसे महाकाव्य विश्व की किसी भी भाषा में नहीं हैं, वर्तमान समय में हिंदी का कथा साहित्य भी फ्रेंच, रूसी तथा अंग्रेजी के लगभग समकक्ष है।

आज हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में जितने रचनाकार सृजन कर रहे हैं उतने बहुत सारी भाषाओं के बोलने वाले भी नहीं हैं, केवल संयुक्त राज्य अमेरिका में ही दो सौ से अधिक हिंदी साहित्यकार सक्रिय हैं, जिनकी पुस्तकें छप रही हैं, यदि अमेरिका से 'विश्वा' 'हिंदी जगत' श्रेष्ठतम वैज्ञानिक पत्रिका 'विज्ञान प्रकाश' हिंदी की दीपशिखा को जलाए हुए हैं तो मॉरिशस से 'विश्व हिंदी समाचार', सौरभ वसंत जैसी पत्रिकाएं हिंदी के सार्वभौम विस्तार को प्रामाणिकता प्रदान कर रही हैं।[3] वर्तमान में 50 से अधिक ऑनलाइन वेब–पत्रिकाएँ इंटरनेट पर मौजूद हैं जो विषय विविधता की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं, जिनमें साहित्य, सिनेमा, विज्ञान, बाल एवं केंद्रीय पत्रिकाएँ मिलती हैं। इसके अतिरिक्त सैकड़ों की संख्या ऑफलाइन हिंदी पत्रिकाओं की है जिसका विवरण Wikipedia-org/wile/ हिंदी पत्रिकाएँ पर जाकर देखा जा सकता है।

हिंदी भाषा के प्रति लोगों का रुझान बढ़ तो रहा है, किंतु रोजगारपरक उपादेयता के प्रति अभी लोगों के मन में आशंका की भावना रहती है। हिंदी भाषा एवं साहित्य पढ़–लिखकर रोजगार की क्या और कहाँ संभावनाएँ बनती हैं ? इस दृष्टि से हिंदी के प्रति लोगों में विश्वास पैदा करने की जरूरत है । शिक्षा आज सीधे रूप में रोजगार से जुड़ी हुई है, जो विषय ज्यादा से ज्यादा रोजगारपरक है, वही अध्ययन के लिए लुभाता है। इस रूप में यह एक तथ्य है कि हिंदी को लेकर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मन में अनेक प्रकार के प्रश्न होते हैं। हिंदी के प्रति हीन–भावना एवं उदासीनता का मुख्य कारण भी शायद यही है। आज के अभिभावक भी अपने बच्चे को स्कूल अथवा कॉलेज में हिंदी विषय पढ़ाने के प्रति कम ही दिलचस्पी रखते हैं। इस संदर्भ में, मैं यह कहना चाहता हूँ कि हिंदी माध्यम से मिलने वाले रोजगारों की कमी नहीं है, बल्कि हमारी अल्पज्ञता के कारण हमें हिंदी की स्थिति कमजोर दिखाई देती है। हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन द्वारा रोजगार के अनेक क्षेत्र हैं, जैसे– शिक्षा का क्षेत्र, मीडिया एवं पत्रकारिता का क्षेत्र, अनुवाद क्षेत्र, प्रशासनिक सेवा क्षेत्र, स्वतंत्र–लेखन एवं प्रकाशन का क्षेत्र आदि। केवल मीडिया के क्षेत्र में ही रोजगार के अनेक विकल्प मौजूद हैं, जैसे दृपत्रकार, संपादक, प्रूफ–रीडर, लेखक, भाषांतरकार,

अनुवादक, चित्र–संपादक, कार्टूनिस्ट, स्लोगन राइटर, विज्ञापन लेखक, फीचर–लेखक आदि। 'हिन्दी अब विश्व बाजार की भी भाषा बन रही है। जल्दी ही यह रोजगार की भाषा बनने जा रही है। मीडिया को इसके संकेत मिल चुके हैं। इसीलिए भारत में मीडिया घराने हिन्दी समाचार–पत्रों, पत्रिकाओं एवं रेडियो–टेलीविजन, चौनलों के प्रति पहले से अधिक गंभीर एवं उत्तरदायी हो रहे हैं। अपने कर्मियों को वे अँग्रेजी उत्पादों में जूटे कर्मियों जैसी ही 'सैलरी' दे रहे हैं। दरअसल, बाजार के खिलाड़ी, बाजार का रुख भाँपकर व्यवहार करते हैं। इसीलिए मीडिया का बाजार हिन्दी के लिए खुल चुका है। हिन्दी के लिए यह स्थिति सुखद है। चाहे–अनचाहे वह इसी वजह से विश्व–बाजार की भाषा बन गई है।[4] इस प्रकार वैश्विक परिदृश्य में हिंदी की रोजगारपरक संभावनाएँ लगातार बढ़ती जा रही हैं, जरूरत है हिंदी के प्रति लोगों में लगाव, रुझान एवं आत्मविश्वास पैदा करने की, साथ ही हिंदी के प्रति कुंठा एवं हीन–भावना को दूर करके भी हिंदी से बहुत कुछ प्राप्त किया जा सकता है। वास्तव में हमें हिंदी की इस शक्ति को पहचानने की आवश्यकता है, जिसे हम भूल बैठे हैं। हिंदी ऐसी दुधारू गाय है जिसे हमने तो लात मारकर दुत्कार रखा है, किंतु विदेशी एवं अन्य भाषा–भाषी उसका दोहन कर रहे हैं, हिन्दी वास्तव में कामधेनु का अवतार है, जिसे सेवा एवं समर्पण द्वारा की उसके अमृतपय का पान करना संभव हो सकेगा न कि उसकी उपेक्षा और उदासीनता को अपनाकर। समग्रतः कहें तो हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल दिखाई देता है, बशर्ते हिन्दी के प्रचार–प्रसार, उन्नयन, प्रयोग एवं संवर्धन में किसी भी प्रकार की उदासीनता न अपनाई जाये।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी का वैश्विक परिदृश्य (लेख)– करुणाशंकर उपाध्याय।
2. विश्व पटल पर उभरता हिन्दी साहित्य– हिमांशु जोशी (लेख), चेतना का आत्मसंघर्ष रू हिन्दी कि इक्कीसवीं सदी– सं० कन्हैया लाल नन्दन , पृष्ठ– 59।
3. हिंदी का वैश्विक परिदृश्य (लेख)– करुणाशंकर उपाध्याय।
4. वैश्वीकरण, मीडिया और हिन्दी (लेख)– अजय कुमार गुप्ता– चेतना का आत्मसंघर्ष : हिन्दी की इक्कीसवीं सदी– सं० कन्हैया लाल नन्दन, पृष्ठ– 78–79।